A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

प्रारंभिक संगीत शिक्षा में राग-अध्यापन की चुनौतियाँ: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

Akhilesh Ahirwar[1], Dr Parul Dixit[2]

1 Research Scholar, Raja Mansingh Tomar Music and Arts University Gwalior
2 Research Guide, Raja Mansingh Tomar Music and Arts University Gwalior

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 21 June, 2026

Ahirwa, A., Dixit, P. (2026). prarambhik sangeet shiksha mein rag-adhyapan ki chunautiyan: rashtriya shiksha niti 2020 ke pariprekshya mein. Swar Sindhu, 14(1), 406-408.

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग-अध्यापन (Raga Pedagogy) प्रारंभिक संगीत शिक्षा का केंद्रीय तत्व है। आरंभिक स्तर पर स्वर-स्थिरता, लय-बोध, आरोह-अवरोह, पकड़ तथा राग के भाव-पक्ष को समझना विद्यार्थियों के लिए एक संवेदनात्मक एवं बौद्धिक चुनौती प्रस्तुत करता है। पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा में यह प्रक्रिया सीना-ब-सीना पद्धति, विशिष्ट घरानों एवं दीर्घकालिक साधना पर आधारित रही है, जबकि वर्तमान संस्थागत शिक्षा प्रणाली में समयबद्ध पाठ्यक्रम, मूल्यांकन पद्धति तथा डिजिटल माध्यमों के कारण शिक्षण-पद्धति में संरचनात्मक परिवर्तन दिखाई देता है। New education policy 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, competency-based learning, experiential pedagogy तथा learner-centered approach पर बल देती है। "राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारतीय भाषाओं, कलाओं, एवं संस्कृति के संरक्षण को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य मानती है"[1] (Government of india, 2020) इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध प्रारंभिक संगीत शिक्षा में राग-अध्यापन की शैक्षणिक चुनौतियों का विश्लेषण करता है तथा यह परखने का प्रयास करता है कि नई शिक्षा नीति के सिद्धांत इन चुनौतियों के समाधान में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं। यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। डेटा संग्रह के स्रोतों में प्रासंगिक साहित्य (पुस्तकें, शोध-पत्र, नीति-दस्तावेज), संगीत शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के साक्षात्कार, पाठ्यक्रम विश्लेषण तथा कक्षा-अवलोकन सम्मिलित हैं। अध्ययन का उद्देश्य केवल समस्याओं की पहचान करना नहीं, बल्कि एक अधिक प्रभावी, कौशल-आधारित एवं विद्यार्थी-केंद्रित राग शिक्षण मॉडल की संभावनाओं को रेखांकित करना भी है। यह शोध भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा को समकालीन शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में अधिक सुदृढ़, लचीला एवं नवोन्मेषी बनाने की दिशा में सार्थक योगदान प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: *राग-अध्यापन; Raga Pedagogy; राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020; गुरु-शिष्य परंपरा; पाठ्यक्रम विश्लेषण*

1.प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'राग' एक जटिल, बहुस्तरीय एवं सांस्कृतिक-संवेदनात्मक संरचना है, जो केवल स्वरों की क्रमबद्धता तक सीमित नहीं, बल्कि एक जीवंत अभिव्यक्ति प्रणाली है। राग-अध्यापन (Raga Pedagogy) इस संरचना के ज्ञान-संप्रेषण का माध्यम है, जो श्रवण, अनुकरण, अनुभव और अंतर्दृष्टि (insight) के समन्वय पर आधारित है। प्रारंभिक संगीत शिक्षा के स्तर पर यह प्रक्रिया विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो जाती है, क्योंकि विद्यार्थी अभी संज्ञानात्मक (cognitive), मनोदैहिक (psychomotor) एवं भावात्मक (affective) विकास के प्रारंभिक चरण में होते हैं। यह अध्ययन इस प्रश्न को केंद्र में रखता है— क्या पारंपरिक राग-अध्यापन पद्धतियाँ आधुनिक संस्थागत ढाँचों में प्रभावी रूप से लागू की जा सकती हैं, या किस तरह पं.भातखंडे द्वारा सिखाई गई राग अध्यापन कला जिसमे सबसे पहले नाद, श्रुति, स्वर, थाट और राग के इस क्रमिक अध्यापन को नए विद्यार्थियों तक पहुंचाना चाहिए , "नाद से स्वर, स्वर से सप्तक, तथा सप्तक से थाट , यह हमारी हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का क्रम है"[2] (भातखंडे, 1956) और इस संबंध में NEP 2020 किस प्रकार एक वैकल्पिक शैक्षणिक प्रतिमान प्रस्तुत करती है?

2. सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (Theoretical Framework)

इस शोध का विश्लेषण निम्न प्रमुख शैक्षणिक सिद्धांतों पर आधारित है—

2.1 निर्माणवादी सिद्धांत

ज्ञान को एक सक्रिय निर्माण प्रक्रिया माना जाता है, जहाँ विद्यार्थी अपने अनुभवों के माध्यम से अर्थ-निर्माण करता है। राग-अध्यापन में यह श्रवण एवं अभ्यास के माध्यम से प्रकट होता है।

2.2 अनुभवात्मक शिक्षा

संगीत शिक्षा में 'करके सीखना' (learning by doing) अत्यंत आवश्यक है—राग की अनुभूति केवल सैद्धांतिक अध्ययन से संभव नहीं।

2.3 प्रतीकात्मक उपलब्धि

राग-अध्यापन में शरीर (voice, breath, gesture) और मन (emotion, perception) का समन्वय होता है—यह केवल मानसिक प्रक्रिया नहीं है।

2.4 परिस्थितिजन्य अधिगम

गुरु-शिष्य परंपरा एक "community of practice" का उदाहरण है, जहाँ सीखना सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में होता है।

3. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

भारतीय संगीत शिक्षा पर उपलब्ध साहित्य से निम्न निष्कर्ष उभरते हैं—

पं..भातखंडे जी ने रागों के संरचनात्मक विश्लेषण को व्यवस्थित किया, किन्तु उनकी पद्धति मुख्यतः सैद्धांतिक रही।विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने संस्थागत संगीत शिक्षा की नींव रखी।

आधुनिक शोध (post-2000) में संगीत शिक्षा को cognitive science, pedagogy और technology के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है।NEP 2020 के बाद interdisciplinary और skill-based learning पर नए विमर्श उभरे हैं।

राग-अध्यापन के पारंपरिक मॉडल और NEP आधारित आधुनिक शैक्षणिक दृष्टिकोण के बीच समन्वय पर सीमित शोध उपलब्ध है।

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

4.1 शोध की प्रकृति

- गुणात्मक (Qualitative)
- व्याख्यात्मक (Interpretive)
- आलोचनात्मक (Critical Inquiry)

4.2 डेटा संग्रह विधियाँ

- अर्ध-संरचित साक्षात्कार (Semi-structured interviews)
- कक्षा-अवलोकन (Classroom observation)
- दस्तावेज विश्लेषण (Document analysis)
- केस स्टडी (Case studies of music institutions)

4.3 विश्लेषण पद्धति

- थीमैटिक विश्लेषण (Thematic Analysis)
- तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)

5. राग-अध्यापन की जटिलताएँ: एक विश्लेषण

5.1 संज्ञानात्मक भार

राग के स्वर, लय, पकड़ और भाव को एक साथ ग्रहण करना प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए अत्यधिक संज्ञानात्मक दबाव उत्पन्न करता है।

5.2 अप्रत्यक्ष ज्ञान

राग का ज्ञान अधिकांशतः अव्यक्त (implicit) होता है, जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है—यह गुरु के साथ अभ्यास से ही विकसित होता है।

5.3 समय का अल्पत्व

संस्थागत शिक्षा में समय की सीमा राग की गहराई को सीमित कर देती है।

5.4 मानकीकरण बनाम वैयक्तिकरण

पाठ्यक्रम की एकरूपता (standardization) व्यक्तिगत सीखने की गति और शैली को बाधित करती है। "संभव है भविष्य में कोई लेखक अपने प्रचलित रागों का वर्गीकरण करे, किन्तु यह कार्य अखिल भारतीय सांगीत परिषद के उत्तम अधिकारी, व्यक्तियों द्वारा समस्त रागों के स्वरूप निश्चित किए बिना संभव नहीं होगा"[3] (भातखंडे, 1941)

5.5 डिजिटल मध्यस्थता

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर राग की सूक्ष्मताओं (microtonal nuances) का संप्रेषण सीमित हो जाता है।

6. NEP 2020: एक आलोचनात्मक विश्लेषण

NEP 2020 संगीत शिक्षा को पुनर्परिभाषित करने की क्षमता रखती है-

क्षमताएं:

सकारात्मक पक्ष,कौशल-आधारित शिक्षण,बहु-विषयक दृष्टिकोण एवं भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन

सीमाएँ:

कार्यान्वयन (implementation) की अस्पष्टता

संगीत शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी

संसाधनों का असमान वितरण

7. प्रस्तावित वैचारिक मॉडल (Proposed Conceptual Model)

"Integrated Raga Pedagogy Model (IRPM)"

यह मॉडल चार स्तंभों पर आधारित है—

1. श्रवण एवं अनुभव (Sensory Immersion)

राग सुनना, महसूस करना। "राग अध्यापन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए विद्यार्थियों कप केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि श्रवण, गायन, चिंतन एवं अभ्यास के माध्यम से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान लिए जाने चाहिए"[4] (kolb, 1984)

2. मार्गदर्शित अभ्यास (Guided Practice)

गुरु के साथ नियमित अभ्यास। "New learners gradually move from peripheral participation toward full participation in a community of practice"[5] (Lave & wenger, 1991)

3. विश्लेषणात्मक समझ (Analytical Understanding)

राग की संरचना का अध्ययन

4. रचनात्मक अभिव्यक्ति (Creative Expression)

आलाप, तान, उपज

8. चर्चा

यह स्पष्ट होता है कि राग-अध्यापन केवल एक शिक्षण प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक embodied cultural transmission है। NEP 2020 इस प्रक्रिया को पुनर्संरचित करने का अवसर प्रदान करती है, किन्तु इसके लिए—शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम में लचीलापन, तकनीकी संसाधनों का संतुलित उपयोग आवश्यक है।

9. निष्कर्ष

प्रारंभिक संगीत शिक्षा में राग-अध्यापन एक बहुआयामी, जटिल एवं संवेदनात्मक प्रक्रिया है, जो पारंपरिक और आधुनिक दोनों शैक्षणिक ढाँचों के बीच संतुलन की मांग करती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा राग के गूढ़ ज्ञान के लिए अनिवार्य है एवं संस्थागत शिक्षा-संरचना और पहुँच प्रदान करती है।NEP 2020 इन दोनों के समन्वय का एक सशक्त अवसर प्रस्तुत करती है अतः भविष्य की संगीत शिक्षा को hybrid pedagogical model की दिशा में विकसित करना होगा, जहाँ परंपरा, तकनीक और नवाचार का संतुलित समावेश हो।

10. संदर्भ

Government of india, 2020, chapter 22,1(1), pp. 61-63
Kolb, D. (1984). Experiential Learning,4(4), pp. 38-41 (4)
Lave, J., & Wenger, E. (1991). Situated Learning,5(5), pp. 29 (5)
भातखंडे,वी.ऐन.(1941)हिंदुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका (Vol. 3) भातखंडे म्यूजिक पब्लिकेशन ट्रस्ट,4(3), पृ. 21 (3)
भातखंडे,वी.ऐन.(1956) हिंदुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका (Vol. 2) भातखंडे म्यूजिक पब्लिकेशन ट्रस्ट,2(2), पृ. 12 (2)